गड्ढे में कांग्रेस और 'नई राजनीति' के शिखर

प्रमोद जोशी

चुनाव का दूसरा बड़ा निष्कर्ष है 'आप' के रूप में नए किस्म की राजनीति का उदय हो रहा है, जो अब देश के शहरों और गाँवों तक जाएगा. इसका पायलट प्रोजेक्ट दिल्ली में तैयार हो गया है.

यह भी कि देश का मध्य वर्ग, प्रोफेशनल युवा और स्त्रियाँ ज्यादा सक्रियता के साथ राजनीति में प्रवेश कर रहे हैं. राजनीतिक लिहाज से ये परिणाम भारतीय जनता पार्टी और नरेंद्र मोदी के आत्म विश्वास को बढ़ाने वाले साबित होंगे.

अशोक गहलोत और शीला दीक्षित ने सीधे-सीधे नहीं कहा, पर प्रकारांतर से कहा कि यह क्लिक करेंकेंद्र-विरोधी परिणाम है. सोनिया गांधी का यह कहना आंशिक रूप से ही सही है कि लोकसभा चुनाव और विधान सभा चुनाव के मसले अलग होते हैं. सिद्धांत में अलग होते भी होंगे, पर सोनिया गांधी और राहुल गांधी की रणनीति भी केंद्रीय उपलब्धियों के सहारे प्रदेशों को जीतने की ही तो थी.

अस्पष्ट संदेश

सोनिया गांधी ने चुनाव परिणाम को विनम्रता से स्वीकार करते हुए पार्टी की रीति-नीति में बदलाव लाने का संकल्प किया है.

सोनिया गांधी ने माना है कि हम जनता तक अपना राजनीतिक संदेश नहीं पहुँचा पाए. सच यह है कि कांग्रेस तय नहीं कर पाई कि उसे संदेश क्या देना था. एक ओर राहुल गांधी कहते हैं कि चमकदार सड़कें, फ्लाई ओवर और ऊँची इमारतें विकास का पर्याय नहीं हैं. हम भरपेट भोजन देकर विकास करेंगे. वहीं कांग्रेस दिल्ली में सड़कों और फ्लाई ओवरों को ही विकास कहती रही.

आर्थिक संवृद्धि और सामाजिक विकास के रिश्ते और सुशासन को कांग्रेस रेखांकित नहीं कर पाई. कांग्रेस को भ्रष्टाचार का प्रतीक भी मान लिया गया. लोकपाल कानून और सिटिजन चार्टर और ह्विसिल ब्लोवर कानून न बन पाने का ठीकरा भी कांग्रेस पर फूटा है. मोटे तौर पर भाजपा और क्लिक करें'आप' यूपीए सरकार को अकुशल, ढुलमुल और फैसले कर पाने में असमर्थ साबित करने में सफल रहे.

सोनिया गांधी ने चुनाव परिणाम को विनम्रता से स्वीकार करते हुए पार्टी की रीति-नीति में बदलाव लाने का संकल्प किया है और यह भी कहा है कि पार्टी अपने प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार की घोषणा उचित समय पर करेगी. पर समस्या प्रधानमंत्री पद के प्रत्याशी की नहीं वर्तमान प्रधानमंत्री के 'मजबूर प्राणी' बन जाने की है. गठबंधन की राजनीति और सत्ता के दो केंद्र होने के कारण यूपीए सरकार को

कदम-कदम पर शर्मिंदगी का सामना करना पड़ा.

रविवार की शाम कांग्रेस मुख्यालय में सोनिया और राहुल ने कहा कि चार राज्यों के विधानसभा चुनाव परिणामों को लेकर पार्टी बेहद निराश है और हमें गहरे आत्ममंथन करने की जरूरत है. हार के अनेक कारण रहे हैं जिनमें महंगाई सहित विभिन्न मुद्दे शामिल हैं.

'आप' से सीखेंगे

राहुल गांधी ने कहा कि दोनों प्रमुख पार्टियाँ कांग्रेस और भाजपा परंपरागत तरीके से राजनीति के बारे में सोचती हैं.

राहुल गांधी ने कहा कि दोनों प्रमुख पार्टियाँ कांग्रेस और भाजपा परंपरागत तरीके से राजनीति के बारे में सोचती हैं. मैं समझता हूँ हमें जनता के सशक्तिकरण के तरीके से समझने की जरूरत है. इस विषय पर मैं अपनी पार्टी के अंदर कहता रहा हूँ. हम 'आप' की सफलता से सीखेंगे. इस नई पार्टी ने बहुत सारे लोगों को जोड़ा जो काम परंपरागत पार्टियों ने नहीं किया.

इसे सेमी फाइनल मानें या न मानें, पर इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि ये परिणाम जनता के इरादों को व्यक्त करते हैं. कांग्रेस ढलान पर है, और अब उसके रथ की गति को रोकना मुश्किल होगा.

सन 2009 में मिले बेहतर जनादेश का सकारात्मक इस्तेमाल करने में कांग्रेस विफल रही. वह अपने परंपरागत तरीके से वोट बैंक की राजनीति कर रही है, जबकि देश की वस्तुगत स्थितियां बदल रहीं है. दिल्ली के परिणामों के सरसरी तौर पर विश्लेषण से लगता है कि मुसलमान वोटरों ने कांग्रेस के पक्ष में वोट डाला. बावजूद इसके केवल एक वोट बैंक के सहारे ने उसे कहीं का रहने नहीं दिया.

इन चुनाव परिणामों से कांग्रेस के कार्यकर्ता के